नई ज़िन्दगी

[ग्रामीण साहित्य माला पुष्प–7]

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ

नई ज़िन्दगी

लेखक
डॉ० गणेश खरे

सम्पादक
डॉ० सुशील 'गौतम'

प्रकाशक
भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ

प्रकाशक :
भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
17 बी, इन्द्रप्रस्थ मार्ग
नई दिल्ली-2

मूल्य : 3 रुपये 50 पैसे

यूनेस्को की आर्थिक सहायता से प्रकाशित

रूप सज्जा :
डॉ० सुशील 'गौतम'

पुस्तक शृंखला संख्या : 124

मुद्रक :
युगान्तर प्रेस
मोरी गेट,
दिल्ली-110006.

भूमिका

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ की ओर से ग्रामीण बहिन-भाइयों को ग्रामीण साहित्य माला का सातवाँ पुष्प भेंट करते हुए हमें अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है। यह साहित्य माला साक्षरता की दिशा में आगे बढ़ने के लिए एक आवश्यक कदम है। वास्तव में, साक्षरता की मूल समस्या, अक्षर-ज्ञान प्राप्त करने के बाद की समस्या है। व्यक्ति लिखने पढ़ने में निरन्तर कुशल बना रहे उसके लिए आवश्यक है कि अक्षर-ज्ञान प्राप्त कर लेने के बाद भी लिखने-पढ़ने का अभ्यास जारी रखा जाए। लिखना-पढ़ना जारी रखने के लिए सरल, मोहक, रोचक तथा उपयोगी पुस्तकों का होना अत्यन्त आवश्यक है। इसका अर्थ यह भी है कि लेखकों को भी यथेष्ट अवसर प्रदान किए जाएं।

जो लोग प्रौढ़ शिक्षा में रुचि रखते हैं और प्रौढ़ों को पढ़ने-लिखने के लिए बढ़ावा देना चाहते हैं उनके लिए सरल, उपयोगी और रोचक सामग्री उत्पादन करना बहुत आवश्यक है। इस आवश्यकता को अनुभव करते हुए भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ ने ग्रामीण जनता के लिए साहित्य-उत्पादन पर विचार-विमर्श करने के लिए, हिन्दी लेखकों की सहायता लेने तथा उनकी एक गोष्ठी आयोजित करने का निश्चय किया।

यह चर्चा, विचार विमर्श तथा गोष्ठी, 4 अगस्त 1978 से 6 अगस्त 1978 तक, नई दिल्ली में, आयोजित की गई। इसका उद्घाटन हिन्दी के जाने-माने लेखक एवं संसद सदस्य श्री भगवती चरण वर्मा द्वारा किया गया। भारतीय ज्ञानपीठ के सचिव श्री लक्ष्मी चन्द जैन ने इसका निर्देशन किया।

जिन मशहूर लेखकों ने इस चर्चा में भाग लिया, उनमें से कुछ ये हैं :

सर्वश्री जैनेन्द्र कुमार, हरिवंश राय 'बच्चन', प्रभाकर माचवे, रमा प्रसन्न नायक, कमला रत्नम्, राजेन्द्र अवस्थी, मन्नू भण्डारी, राजेन्द्र यादव, इन्दु जैन, बालशौरी रेड्डी इत्यादि। कुछ मशहूर प्रकाशकों ने भी अपना-अपना दृष्टिकोण और अपनी समस्यायें प्रस्तुत करने की चेष्टा की। इन प्रकाशकों में से प्रमुख प्रकाशक थे सर्वश्री दीना नाथ मल्होत्रा, यशपाल जैन, कृष्ण चन्द्र बेरी, रघुवीर शरण बंसल, शीला सन्धु इत्यादि।

हम, इन सभी सहयोगियों के आभारी हैं कि उन्होंने कार्यशाला को महान सफलता प्रदान की। उन चर्चाओं के आधार पर ये दस पुस्तकें भेंट करते हुए हमें हर्ष हो रहा है। हमें पूरी आशा है कि ग्रामीण जन-समाज इसका खुशी से स्वागत करेगा, क्योंकि ये पुस्तकें उनके जीवन से, उनकी समस्याओं से, उनके परिवेश एवं उनकी संस्कृति से जुड़ी हैं।

हम यूनेस्को के अनयंत आभारी हैं कि उन्होंने यह गोष्ठी आयोजित करने के लिए संघ को आर्थिक सहायता प्रदान की।

इस गोष्ठी में, गोष्ठी के निर्देशक श्री लक्ष्मी चन्द जैन के कुशल निर्देशन एवं सूझ-बूझ तथा प्रौढ़ शिक्षा की सम्पादिका श्रीमती बिमला दत्ता की लगन, मेहनत और भाग-दौड़ ने गोष्ठी को सफल बनाने में बहुत सहायता दी। संघ इनका भी बहुत आभारी है।

आशा है कि पाठकों को यह प्रस्तुत ग्रामीण साहित्य माला पसन्द आएगी।

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
17-बी, इन्द्रप्रस्थ मार्ग,
नई दिल्ली.
2 अक्टूबर 1978

—शिव चन्द्र दत्ता
अवैतनिक महासचिव

नई ज़िन्दगी

नई ज़िन्दगी

पात्र परिचय

1.	सुरेन्द्र चन्द्र	...	...	गांव के पटवारी
2.	ठाकुर साहब	...	...	शराब के ठेकेदार
3.	सीता राम	...	...	ठाकुर साहब का लड़का, कॉलेज का छात्र
4.	भगत राम	...	...	एक लोक नायक
5.	गुलिया	...	...	भगत राम की पत्नी

नई ज़िन्दगी

दृश्य : 1

[स्थान : बुंदेलखण्ड का एक गांव]

[रंगमंच पर एक बुंदेली लोक गीत [खयाल] गाते हुए भगत राम का प्रवेश "पीले रे शराब जो तन मिले फिर मिले ने।" [तम्बूरा बजाता है]

[दूसरी ओर से ठाकुर साहब का प्रवेश। भगतराम ठाकुर साहब को देखकर]

भगतराम : राम राम हो ठाकुर साहब !

ठाकुर साहब : राम राम भगत जी !

भगतराम : [गाते हुए]—'थोड़ी दे देयौ शराब मोरी सराप झेलियों ने।'

ठाकुर साहब : [हँस कर] जरूर मिलेगी भगतराम ! अभी चलो दुकान पर। तुम्हें शराब न पिलाई तो मेरी 'हिरन छाप' शराब बदनाम हो जायेगी ?

भगतराम : सो तो है ही ठाकुर साब ! आपकी कृपा से अब तो शराब ही मेरा सब कुछ है—महुआ मेरा बाप, शराब मेरी माँ, गुली मेरी औरत, गुलेंदो मेरा बेटा और ठर्रे का ठेकेदार मेरा भगवान ! है कोई मुझसे अधिक भाग्यवान ?

ठाकुर साहब : [मूछों पर ताव देते हुए] जब तक मैं जिन्दा हूँ, चिन्ता की कोई बात नहीं भगतू ! तुझे तो सम्हाल कर शराब के मटके में रखेंगे,

मटके में। पर मेरा काम ठीक तरह से होना चाहिए भगतू ! समझे न ?

भगतराम : सो तो है ही ठाकुर साब! जब तक मेरे तम्बूरे के तार जिन्दा हैं और गला तुम्हारे देसी मसाले से तर है तब तक तुम भी चिन्ता न करो मालिक! भगत के पीछे यह सारा इलाका तुम्हारा भी भगत हो जायेगा।

ठाकुर साहब : पर कल तुम कुछ कम ग्राहक लाये भगत राम !

भगतराम : कम ! क्या कल लछमनियाँ, अर्जुना और लटोरा नहीं आये ?

ठाकुर साहब : आये थे भगतू ! पर ठेकेदार का पेट कहीं दो-तीन ग्राहकों से भरता है ?

भगतराम : सो तो है ही साब ! पर लछमनियाँ को ऐसा-वैसा मत समझना ! दो हलों का पक्का किसान है। दो हजार की तो मूंमफली निकली है इस साल ! अभी-अभी गोप और गुँजे बनवाई हैं उसने ! और अभी है क्या—समझ लो मसें भीग रहीं हैं। पीने बैठेगा तो पूरा मटका पी जायेगा, मटका और...अर्जुन तो...

ठाकुर साहब : [बात काट कर] पाँव बोरा आलू लगा रहा है अपने खेतों में ! यही न ?

भगतराम : सो तो है ही साब ! लटोरा ने तो अभी-अभी बिजली का पंप लगवाया है अपनी गुहारी में।

ठाकुर साहब : अच्छी तरह जानता हूँ भगत ! इन हरामियों को। काइयाँ हैं एक नंबर के। एक दिन पिएंगे तो चार दिनों तक होंठ चाटेंगे होंठ !

भगतराम : सो तो है ही साब ! रात में ही लछमनियाँ ने गजब ढा दिया ! अपनी औरत को वह मार लगाई है कि सारा मुहल्ला जाग उठा !

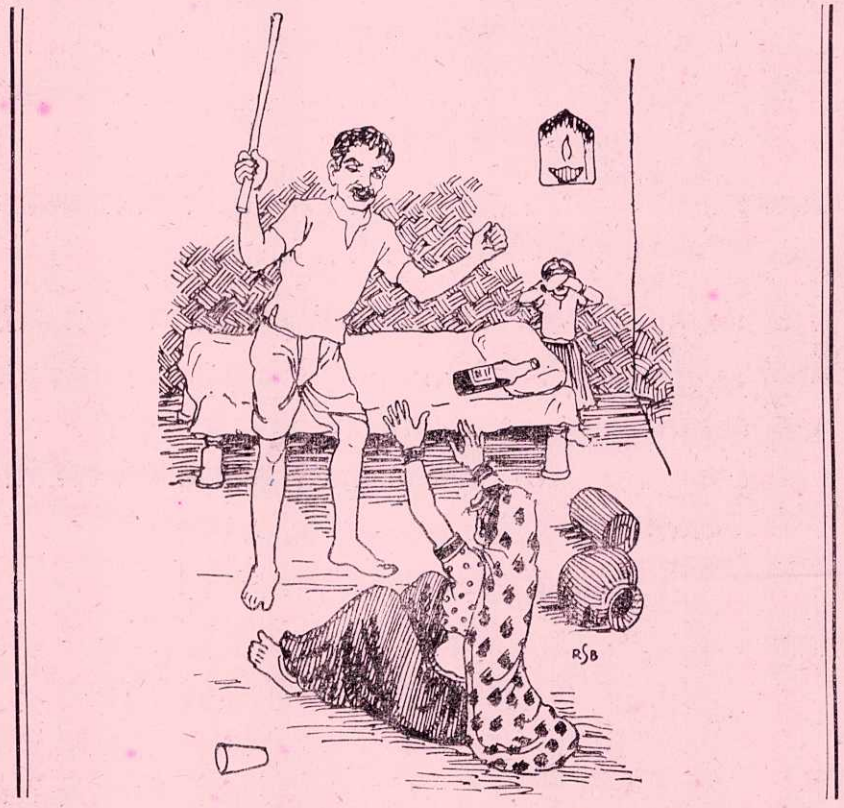

ठाकुर साहब : एक रुपये का ठर्रा इतना चढ़ गया ? देख लेना रे भगतू ! यह आदमी धोखा दे जाएगा हमें। ये अच्छे लच्छन नहीं हैं। [कुछ सोचकर] अब तू एक काम कर [अपनी जेब से एक बोतल निकाल कर] ले यह बोतल और उसकी औरत को मेरी ओर से मुफ्त में पिला आ !

भगतराम : न बाबा ! न ! ऐसा पाप नहीं कर सकता। लछमनियाँ की औरत! इस तम्बूरे के साथ-साथ मेरी टांगे भी तोड़कर रख देगी ठाकुर साहब ! शायद अभी तुमने उसे देखा नहीं है—[गाता है] 'महुआ की कली और फिर शराब में डुबोई।'

ठाकुर साहब : [कुछ सोचकर] तो फिर कुछ दूसरा प्रबन्ध करना होगा भगतराम ! तुम यह ठर्रा अपनी ओर से लछमनियाँ को ही दे आओ। मुफ्त की शराब में ज्यादा रंग चढ़ता है।

भगतराम : [शराब की बोतल लेता हुआ] सो तो है ही साब ! पर अब लच्छू की गुहारी पर नजर है या उसकी महुए की कली पर ? मनमोहना के दोनों बैल तो कल शाम तुम्हारे दरवाजे पर आ ही गए ?

ठाकुर साहब : भगतू ! यह मेरा नहीं मेरी लाल तीखी दवा का प्रताप है। मैंने दिल खोलकर लोगों को पिलाना सीखा है।

भगतराम : सो तो है ही साब ! पर अब मेरा कमीशन भी बढ़ना चाहिए ?

ठाकुर साहब : क्यों रे भगतू ! तेरी नस-नस में मेरी शराब की धारा बह रही है और अब तू मेरे ही साथ नमक-हरामी करता है रे ! क्या मैं तुझे हर रोज दारू की बोतल मुफ्त में नहीं पिलाता रे ! बोल !

भगतराम : सो तो है ही साब ! पर पानी मिला कर !

ठाकुर साहब : और तेरा बाप दूध में पानी नहीं मिलाता है क्या ? बोल दूध 'सत्यनारायण' की पूजा में काम में आता है या नहीं ? गाय हमारी माता है या नहीं ? जब दूध में पानी मिलाना धरम-करम है तो शराब में पानी मिलाना पाप हो गया रे ? शराब हम सब का पेट पालती है तो वह गाय की तरह हमारी माता हुई कि नहीं ?

भगतराम : सो तो है ही साब ! पर कल रात जब पटवारी ने फिर कुछ कड़ी बात कह दी तो जी भर गया। चाकरी तुम्हारी करूँ और गालियाँ पटवारी की खाऊँ ! न बाबा ! ये लो अपना तम्बूरा !

ठाकुर साहब : क्या कहा रे ! पटवारी ने तुझे गालियाँ दी ! भगवान के एक भगत को गालियाँ दीं ! इसका मतलब है—मुझे गालियाँ दीं। मैं सरकारी ठेकेदार हूँ, मतलब है—सरकार को गालियाँ दीं। [कुछ सोचकर] पर गालियाँ उसने दी क्यों ?

भगतराम : लच्छू के कारण ! पंचायत जुड़ी थी रात में। पटवारी का कहना था—लच्छू को मैंने भगत के साथ देखा था शाम को। वही ले गया होगा उसे भट्टी पर। मैं पूछता हूँ, भगत रोज पीता है तो लच्छू को आज तक क्यों नहीं चढ़ी ?

ठाकुर साहब : ठीक ही तो कहा था तूने ! कोई किसी को जबरन तो नहीं पिला सकता ?

भगतराम : जब यही बात मैंने पटवारी से कही तो वह कहने लगा—धूर्त ! शराबबंदी के विशेष पुलिस दस्ते को सूचित करके मैं कल ही तेरे भगतपन का यह नकली चोला उतरवा दूँगा ? भगवान का भगत बनकर शराब का प्रचार करता है ? अब तुम्हीं बताओ ठाकुर साहब ! क्या मैं नकली भगत हूँ ?

ठाकुर साहब : अब इस पटवारी के अत्याचार ज्यादा बढ़ गये हैं भगतू ! ससुरा खाते की नकल के लिए एक पैसा तक नहीं लेता। खेत की नपाई के नाम पर पान भी नहीं खाता ! सत्यवादी हरिश्चन्दर बनता है। सीधी-सादी गाँव की जनता को मेरे विरुद्ध भड़का रहा है ! मेरी रोजी-रोटी पर लात मार रहा है ! देख लेना भगतू ! इसके रोम-रोम में कीड़े पड़ेंगे, कीड़े !

भगतराम : सो तो है ही साब जी !

ठाकुर साहब : मैं अभी तक उसका लिहाज करता रहा। वह सरकारी कर्मचारी, मैं सरकारी ठेकेदार ! दोनों भाई-भाई ! पर हर घर में एक न एक विभीषण तो निकल ही आता है किन्तु मैं उसे लात मारकर घर से निकालने की गलती नहीं दुहराऊँगा। कुछ नयी तरकीब सोचनी होगी। सांप भी मरे और लाठी न टूटे।

भगतराम : तुम तो सोचते ही रहोगे ठाकुर साहब ! तब तक वह तुम्हारी शराब की दुकान में खुलवा देगा पाठशाला और हम दोनों को भिजवा देगा हवालात !

ठाकुर साहब : क्या कहा रे हवालात ! ठाकुर को इतना कम अकल का समझता है ? आज मेरे घर में चार हल और दो पम्प तेरी बुद्धि पर चल रहे हैं क्या ? तू लच्छू को देख जाल से न निकलने पाये और मैं शैतान के बच्चे पटवारी को 'हरक्यूलस' की बोतल में बंद करता हूँ। और देख ! कह देना अपनी गुलिया से, घर से पुरानी साड़ी मांग कर ले जायेगी।

[ठाकुर जाता है ! भगतराम दूसरी दिशा से जाने की चेष्टा करता है तभी उसी दिशा से आ रहे सीताराम से उसकी मुठ-भेड़ हो जाती है ! भगतराम गिरता है और उठने का प्रयत्न करता है। सीताराम के हाथ में एक थैला है जिसमें शराब की बोतलें भरी हैं]

सीताराम : क्यों बे लल्लू ! रात के अंधेरे में भी तुझे दिखाई नहीं देता ?

भगतराम : कौन, छोटे मालिक सीताराम ? शहर से कैसे आना हुआ भैया ?

सीताराम : क्यों बे ! क्या अपने घर आने लिए भी किसी से पूछना पड़ेगा ?

भगतराम : नहीं मालिक ! मेरा मतलब है कि रात को छुट्टी कैसे मिल गई आपको ?

सीताराम : छुट्टी ! क्या मतलब ? मुझे कौन छुट्टी देगा रे ?

भगतराम : मैं क्या जानू सरकार ! बड़े मालिक कह रहे थे--मेरा सीता-राम ! बहुत पढ़ रहा है आजकल ! रात-रात भर जागता रहता है ! उसके साथी उसे छुट्टी ही नहीं देते ?

सीताराम : तो बाप समझता है कि बेटा बहुत पढ़ रहा है कालेज में ? [हँसता है] खूब ! अबे बुद्धू ! जब तक बाप की शराब की दुकान आबाद है तब तक बेटे को किस बात की चिन्ता ? बस 'टाप हाट' और 'रेड नाइट' की एक-एक घूंट में स्वर्ग उतर आता है धरती पर। [बात बदलकर] क्यों बे भगतू ! तुझे

कितनी बार खबर भेजी कि माल-पानी खतम हो गया पर तू हरामी ईद का चांद बन गया ? [मारने दौड़ता है। भगतराम बचने का प्रयत्न करता है]

भगतराम : सो तो है ही साब ! पर बड़े मालिक तो आजकल माल-पानी पर हाथ नहीं रखने देते ?

सीताराम : लगता है यह बुड्ढा मरने के बाद नरक में भी शराब की दुकान ले जायेगा ? बाप इस इलाके का शराब का सबसे बड़ा ठेकेदार और बेटा गंगाजल पीकर जिए ? [हँसता है] साला यह संसार बड़ा हरामी है। सब अपना-अपना सुख देखते हैं।

भगतराम : सो तो है ही साब ! देखो न ! अब मेरा काम भी कितना खतरनाक हो गया है। कल ही भरी पंचायत में पटवारी कह रहा था—सरकार ने अब शराब के सभी प्रकार के विज्ञापनों पर रोक लगा दी है। कालेजों और स्कूलों की दिवालों पर अब यह नहीं लिखा जा सकता [गाता है]—"शराब से अच्छा कौन है ? दोस्ती कर लो, जान लो। हम तुम्हारे हैं सजन, तुम हमें पहचान लो..."

सीताराम : सरकार ने विज्ञापनों पर रोक लगाई है तेरे इस तम्बूरे पर तो नहीं ?

भगतराम : सो तो है ही साब ! भजन पर कौन पाबंदी लगा सकता है। शराब तो बाबा जी का परसाद है। जिस दिन रोक लगी, उसी दिन समझ लो परलय हो जायेगा, परलय। [गाता है]—"शंकर बाबा पी कर शराब।"

सीताराम : चुप भी रहेगा कि नहीं, बुद्धू कहीं का !

भगतराम : सो तो है ही साब ! अपना तो एक ही धंधा है—[गाता है]—"महुआ की रे चाय मीठी लगे शक्कर से।"

सीताराम : तू है काम का आदमी रे भगतू। चल कुछ दिनों के लिए मेरे साथ शहर, तुझे पूरा ट्रेंड कर दूँगा, फिर देखना तेरा लटकना-मटकना क्या गुल खिलाता है ?

भगतराम : ना बाबा ! ना ! शहर में क्या रखा है ? वहाँ अपना देसी परसाद कहाँ ? सुनते हैं वहाँ तो सब नकली माल मिलता है, नकली ?

सीताराम : अबे चल ! तूने अभी शहर देखा ही कहाँ हैं ? चल किसी होटल में तुझे बेरा बनवा दूँगा ?

भगतराम : थू मालिक ! होटल जाकर कौन अपना धरम-करम खराब करेगा ?

सीताराम : अबे सुसरे ! वहाँ तेरा बिगड़ा हुआ धरम-करम सुधर जायेगा। दस-दस रुपये टिप मिला करेंगे तुझे।

भगतराम : दस-दस रुपये टिप ! सच मालिक !

सीताराम : अभी से तेरी जीभ में पानी आने लगा !

भगतराम : सो तो है ही साब ! पर···

सीताराम : पर, पर, पर के बच्चे ! फेंक इस तम्बूरे को [धक्का देकर] और पकड़ यह थैला। अभी-अभी बाप की दुकान से चुराकर लाया हूं ये बोतलें। एक हजार तिजोरी से भी साफ कर दिए हैं ! हराम की कमाई हराम में जानी चाहिए न भगतराम !

भगतराम : सो तो है ही साब ! पर ठाकुर साब...

सीताराम : अबे गधे ! वह तेरा बाप है या मेरा ? शायद मेरा बाप समझता है कि मेरा बेटा बी० ए० पास करके आबकारी इंस्पेक्टर बनेगा ! [हंसता है] शराब, गांजा, चरस, अफीम की ओर आंख उठाकर नहीं देखेगा ? चोरी को पाप समझेगा ? जुआ से परहेज करेगा ? चकलाघरों से बचेगा ? भगतू ! यह सब बकवास है ?

भगतराम : सो तो है ही साब !

सीताराम : सो तो है ही साब के बच्चे ! उठा ये बोतलें ? क्या तुझे पता नहीं कि आज मेरे जश्न का दिन है ? [पाकिट से हार निकालकर] देख ! अपनी माँ के गले के सात तोले के इस हार पर भी आज मैंने हाथ साफ कर दिया और [हार पाकिट में रखकर दूसरे पाकिट से मंगल-सूत्र निकालकर] लगे हाथ पत्नी के गले का यह मंगल-सूत्र भी झटक लिया। रोती थी मूर्खा ! भारत की औरतें जोंक की तरह चिपकती हैं सोने से ?

भगतराम : [बोतलें उठाने की चेष्टा करते हुए] ये तो बहुत भारी हैं सरकार !

सीताराम : [मुँह बनाकर] बहुत भारी हैं सरकार ! अभी दे दूँ तो सब की सब एक ही रात में गटक जायेगा। उठा और जल्दी चल मेरे साथ वरना मोटर छूट जाएगी। आज रात के १२ बजे से पहले मुझे शहर जरूर पहुँचना है।

[सहसा ठाकुर साहब का दौड़ते हुए रंगमंच पर प्रवेश। उन्हें देखकर भतगराम तीन-चार शराब की बोतलें तथा अपना तम्बूरा हाथ में लेता हुआ भागता है]

ठाकुर : [हांफते हुए] कमबख्त ! हरामी ! तिजोरी तोड़ कर सब कुछ लिए जा रहा था ? चोर, चंडाल !

सीताराम : किस से बात कर रहे हो बापू !

ठाकुर : सीतारमवा तू ! नालायक ! चोरी करता है ? मेरा इकलौता बेटा बनता है ? शर्म नहीं आती तुझे ?

सीताराम : शराब पीकर कोई किसी का बेटा नहीं रह जाता बापू ! और शराब पीकर भी किसी को शर्म रह गई तो वह शराब ही नहीं कहलाती ? आगे बढ़े तो अच्छा नहीं होगा ? कालेज में सब लड़कों का दादा हूँ ।

ठाकुर : तू ! तू ! मुझे मारेगा ? ले मार ! मार ! चोरी करता है और ऊपर से सीनाज़ोरी ? तुझे हरामी ! आज तक छोड़ता रहा पर आज तुझे जान से मार डालूँगा । कमबख्त, गधे की औलाद कहीं के ! [हाथ उठाता है मारने के लिए]

[लेकिन सीताराम पीछे हट जाता है और तेजी से शराब की बोतलों का थैला लेकर भाग जाता है । पर्दा गिरता है]

[दृश्य 2]

[स्थान—गुलिया का घर । कमरे के भीतर से एक बच्चे के रोने की आवाज आ रही है । गुलिया चिल्ला-चिल्लाकर कह रही है]

और रोओ सुसरे, और जोर से रोओ ! तुम्हारा बाप कमा कर रख गया है न घर में सो मैं रांध कर तुम्हारे मटके में भर दूँ ।

कह दिया—कुछ नहीं घर में, मर भी जाओगे तब भी कुछ नहीं है रे। रोज़-रोज़ की झंझट से तो अच्छा है कि नदी में कूद मरो, कुएँ में गिर पड़ो ! ज्यादा ही भूख लगी है तो धतूरा चबा लो। [रोकर] कुछ नहीं बेटे ! कुछ भी नहीं है घर में ! [पीटती है] चुपचाप सो जाओ [बच्चा सिसकता है और शान्त हो जाता है। रोती हुई गुलिया रंगमंच पर प्रवेश करती है]

गुलिया : दिन भर ससुरे ठाकुर के कंडे पाथे। शाम को खाने के लिए अनाज मांगा तो ठेंगा दिखा दिया। कहने लगा— बोल देना भगतू से एक पौवा ताड़ी और चढ़ा लेगा दुकान से। अनाज का तू क्या करेगी गुलिया ! पति को शराब नहीं पिलायेगी तो रौरव नरक में जायेगी, रौरव नरक में ? [गाते हुए भगतराम का प्रवेश..." पागल हो गव संसार, दे दई जवानी शराब सी" औ...पागल हो गव संसार...]

भगतराम : अरी भाग्यवान ! इस तरह क्यों रो रही है ? अरे माह में एक दिन तो शान्ति से रहा कर ? देख पहली तारीख को हम तेरे लिए क्या लाए हैं ? [शराब की बोतलें दिखाता है] इसे पिएगी तो सारा रोना-धोना भूल जायेगी ?

गुलिया : तू आज फिर पीकर आ गया ? बोल ! क्या यही शराब तेरे भूखे बच्चे को भी पिला दूँ ?

भगतराम : जरूर, जरूर। थोड़ी तू भी पी...सारा क्रोध हिरन हो जायेगा ?

गुलिया : मेरे तो करम फूट गये ! इससे तो अच्छा था तू मर जाता। रात-दिन की यह झंझट...

भगतराम : पति परमात्मा होता है भाग्यवान ! और परमात्मा को कौन मार सकता है ? [गाता है]...पहले पी ले शराब पीछे चढ़इयों भगवान पे"। [तम्बूरा बजाता है]

गुलिया : आज मैंने तेरा तम्बूरा नहीं तोड़ा तो मेरा नाम गुलिया नहीं ? [तम्बूरा छुड़ाती है]

भगतराम : अरी भाग्यवान ! यह तो मेरी रोज़ी-रोटी है ? गुलिया तुझे महुआ की भट्टी की कसम, शराब के मटके की कसम, देसी ठर्रे

की सौंगध, तुझे अंग्रेजी शराब की आन—तम्बूरा का तार नहीं तोड़ना वरना मेरे जीवन के सारे तार टूट जायेंगे ?

गुलिया : [तम्बूरे को तोड़-मरोड़ कर एक ओर फेंकती हुई] ले ससुरे ! यह तम्बूरा ही शराब की जड़ है और अब आज तुझे भी देखती हूँ। पकड़ने की चेष्टा करती हैं।

भगतराम : [बचने की चेष्टा करता हुआ]—अरी भाग्यवान ! उलटा काम करती है। शराब पीकर पति मारता है पत्नी को या शराब न पीकर पत्नी मारती है पति को। उल्टी गंगा न बहा ? पाप लगेगा पाप ! सुन पुसउवा शराब पीकर आया है और किवाड़ बन्द कर अपनी बीबी को साम लगी लाठी से ऐसे पीट रहा है जैसे कि धुबिया कपड़े पछाड़ रहा हो। मुनिया की चीखें यहाँ तक सुनाई दे रही हैं। कान लगाकर सुन [नेपथ्य से मारने और रोने की आवाजें आती है]

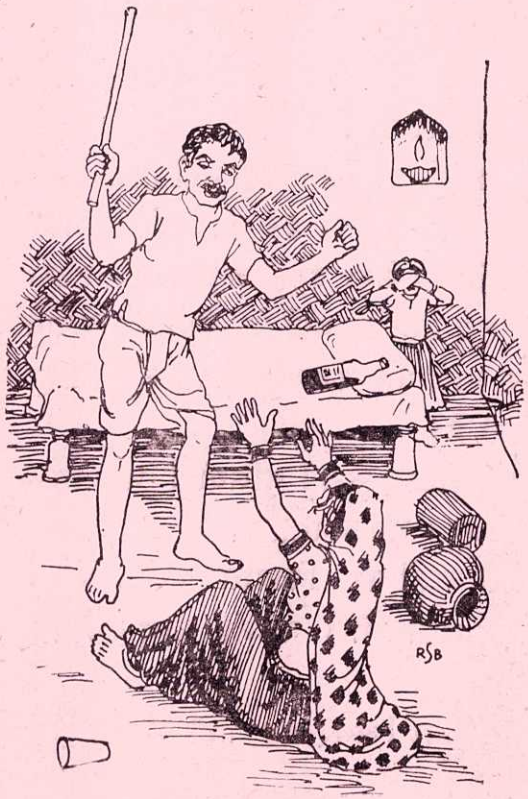

गुलिया : मैं मुनिया नहीं हूँ रे ! तूने मुझे समझा क्या है ? तेरे बाप का नहीं खाती। दिन भर छाती मारती हूँ और शाम को पीस राधं कर तेरी भी ठठरी भरती हूँ। तू मुझे मारेगा, गला नहीं मसक दूँगी ? [आगे बढ़कर भगतराम का गला पकड़ लेती है और कहती है] बोल ! मैंने तुझे जी भर शराब नहीं पिलाई ?

भगतराम : [घबड़ाकर] पिलाई है भाग्यवान ! छोड़ तो दे ?

गुलिया : बोल ! तूने मेरे जेवर बेचकर शराब नहीं पी ?

भगतराम : पी है।

गुलिया : तूने घर की चोरी करके शराब नहीं पी ?

भगतराम : पी है।

गुलिया : तू जुए में घर का खेत नहीं हार गया क्या ?

भगतराम : हार गया।

गुलिया : तूने जुए के दाव पर मुझे नहीं लगा दिया था ?

भगतराम : सो तो युधिष्ठिर ने भी द्रौपती को लगा दिया था ?

गुलिया : मैं द्रोपदी नहीं हूं रे ! तेरा ऐसा कंस-करोड़न करूंगी कि जीवन भर याद रखेगा ?

भगतराम : छोड़ दे गुलिया ! अब कभी नहीं पिऊंगा। तेरी कसम खाता हूं...

गुलिया : [गला छोड़ती हुई] इस तरह की कसमें तो तूने उस समय भी खाई थीं जब मेरा बड़ा लड़का मोतीझरा में तड़प रहा था और तूने उसकी दवाई के पैसों की शराब लेकर पी ली थी। अगर आज वह ज़िन्दा होता तो सोलह बरस का होता ? [रोती है]

भगतराम : [हाथ जोड़ता हुआ] गुलिया ! भगवान की सौगंध ! इस बार क्षमा कर। अब कभी...

गुलिया : मैं तेरी बातों पर विश्वास करूंगी अब ! शराबी, जुआरी, भंगेड़ी, अफीमची ! नकली साधू बनता है ! भगवान को भी लजाता है !

भगतराम : सच गुलिया ! अगर अब कभी पी, तो...तुम मुझे जान से मार डालना।

गुलिया : तूने कितनी बार कसमें नहीं खाई हैं रे ! कितनी बार सत्ती माँ के चबूतरे पर सिर रखकर नहीं कहा है—माँ ! अब नहीं पिऊंगा ! छिमा कर दे माँ ! बदजात कुत्ते ! तेरा भी कोई जीवन है ?

भगतराम : इस बार और क्षमा कर गुलिया ! बस, अन्तिम बार। कान पकड़कर सौ बार उठता-बैठता हूं [कान पकड़कर उठता-बैठता है]

गुलिया : ससुरे ! सारी जिन्दगी भरतू इसी तरह नाटक करेगा ? कितने बसे बसाये घर उजाड़ दिये तूने ?

भगतराम : क्षमा कर देवी ! मैंने अब से ठाकुर की नौकरी छोड़ी। मजदूर करेंगे अब मजदूरी !

गुलिया : और दिन भर की कमाई से शाम को ताड़ी पीकर आ जाना मेरे हाड़ खाने ?

भगतराम : गुलिया ! आज से शराब का नाम लेना भी बंद। शहर चलेंगे हम और किसी मिल या कारखाने में काम करेंगे। यह गाँव ही सारी झंझटों की जड़ है ?

गुलिया : मुझे चराता है रे ! पुस्तैनी घर छोड़कर शहर की सड़कों पर डेरा धरने जाऊंगी मैं ? अपनी आदतें नहीं सुधारेगा, गाँव को दोष देगा ?

भगतराम : भगतराम को तूने समझा क्या है गुलिया !

गुलिया : किराये का कुत्ता ! जिसने रोटी फेंकी उसी के पैर चाटने लगा और उसी के आगे-पीछे अपनी पूंछ हिलाने लगा !

भगतराम : भगतराम ! कुत्ता नहीं री गुलिया शेर है शेर ! जिस दिन मेरा तम्बूरा शराब के विरोध में बजेगा उस दिन उसे भगवान भी नहीं रोक सकता। [खांसता है]

गुलिया : वह दिन तेरे इस जीवन में कभी नहीं आयेगा रे ! तू तो यों ही रात-रात भर घुल्ल-घुल्ल कर टी० बी० से मरेगा। [भगतराम और जोर से खांसता है] तुझे शराब नहीं मिलेगी तो

गांजा पियेगा। गांजा नहीं मिला तो अफीम खायेगा। कुछ नहीं मिला तो तम्बाखू गुटकेगा। तुझे तो एक न एक नशा करने को चाहिए और एक न एक औरत पीटने को। भूखे बच्चे को देखकर तेरे मन का राक्षस नाचता है रे ?

भगतराम : गुलिया ! लगाम लगा अपनी जवान की घोड़ी को ! भगतराम के बच्चे भूख से मरें और भगतराम शराब के नशे में धुत्त पड़ा रहे ! नहीं, अब यह नहीं होगा ! मैं नहीं चाहता कि मेरे बच्चे भी सीताराम बनें। मुझे लातें मारें और तेरे गले की काली पोत की माला भी एक झटके में तोड़कर ले जायें और किसी ताड़ी की दुकान में जाकर शराब पी डालें ?

गुलिया : क्या कहा तुमने ! तुम अपने बच्चे को शराबी नहीं बनाना चाहते ? तुम उसे पशु नहीं बनाना चाहते ? तुम उसे आदमी बताना चाहते हो ? फिर से तो कहो इस बात को ?

भगतराम : हां गुलिया ! मैं अपने बच्चे को अपने जैसा कुत्ता नहीं बनाना चाहता। मैं उसे आदमी बनाना चाहता हूँ—भीतर से बाहर तक आदमी—एक पूरा आदमी।

गुलिया : तुम मुझे आज फिर ठग रहे हो ? शराब में डूबा हुआ पशु एक पूरा आदमी कैसे बन सकता है ? एक पागल जंगली सुअर इंसान कैसे बन सकता है ?

भगतराम : इस दुनिया में सब कुछ संभव है गुलिया ! आदमी जन्म से शराब नहाँ पीता। वह पीता है कुसंगति में पड़ कर, मुझ जैसे लोगों के बहकावे में आकर। शराब उसके दिल को निरन्तर कमजोर करती रहती है और अपनी कमजोरी को छिपाने के लिए वह पहले से ज्यादा शराब पीने लगता है। पटवारी जी ठीक ही कह रहे थे—शराब धीरे-धीरे नहीं छोड़ी जा सकती। उसे तो एक ही झटके में छोड़ देना चाहिए। नरक से जितनी जल्दी छुटकारा मिले उतना ही अच्छा। [शराब की बोतलें निर्दयापूर्वक तोड़ता है]

गुलिया : यह क्या ? क्या सचमुच तुमने शराब छोड़ दी ?

भगतराम : हां गुलिया ! इस साक्षात रोरव नरक ने मुझे इंसान से हैवान बना दिया था। इसने मुझसे मेरा प्यारा खेत छीन लिया। इसने इन हाथों से तुम पर नाना जुल्म कराये। इसने मुझसे

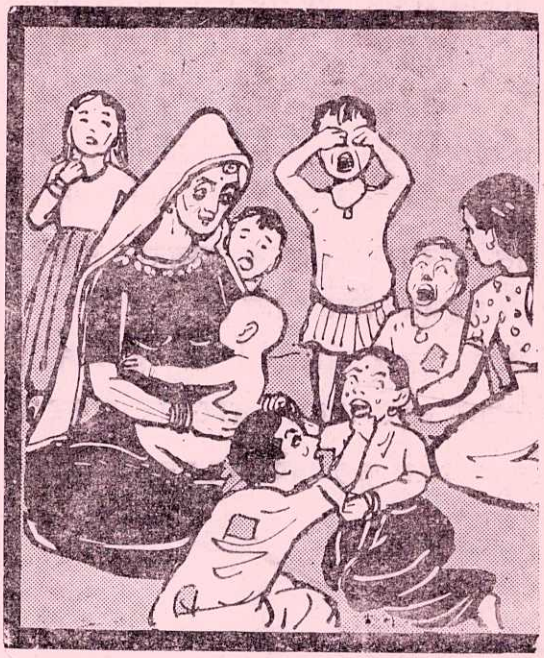

मेरा प्यारा बच्चा छीन लिया। इसने मेरे बच्चों को भूखा तड़पाया। इसने...

[सहसा पटवारी जी का प्रवेश। उन्हें देखकर गुलिया मुख पर घूँघट डालती है और दरवाजे के पास जाकर खड़ी हो जाती है]

पटवारी : मैंने सब सुन लिया है भगत जी ! सब सुन लिया। यह तो बहुत ही...

भरगराम : सरकार आप ! मुझे क्षमा करें सरकार ! आज से शराब की और देखूंगा भी नहीं . [पैर पकड़ता है]

पटवारी : उठो भगत ! प्रायश्चित केवल शराब की बोतलें तोड़कर नहीं किया जा सकता। तुम्हारे कारण आज आधा से अधिक गाँव शराब की चपेट में आ गया है। सैकड़ों बसे-बसाये घर तुम्हारे शराब के भजनों से उजड़ चुके हैं। उठो और जोड़ो जीवन के

ये टूटे हुए तार । तोड़ने की तुलना में जोड़ना बहुत कठिन होता है भगत !

भगतराम : सरकार अब इस जर्जर शरीर में बचा ही क्या है ? जो कुछ था वह शराब की अग्नि में स्वाहा हो गया । अब पहले जैसा स्वर भी कहाँ ? फटे और खोखले बांस की तरह हो गया है । मेरा जीवन मालिक !

पटवारी : मैं जानता हूँ भगत ! तुम कलाकार हो । अभी तुम्हारी कला गुमराह हो गई थी । आज उसे नयी जिन्दगी मिल गई है । उठो और उठाओ अपना तम्बूरा । संगीत में दुनिया को बदलने की अद्‌भुत शक्ति होती है भगत !

भगतराम : आप कहते हैं मालिक ! तो यह भगत फिर तम्बूरा उठाएगा, नाचेगा और गाएगा । द्वार-द्वार जाकर अलख जगाएगा ।

पटवारी : बहू ! ये लो कुछ रुपये और बच्चों के खाने-पीने का प्रबन्ध करो ।

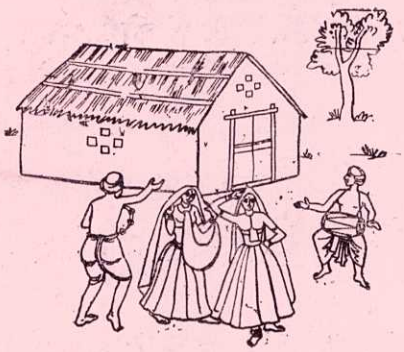

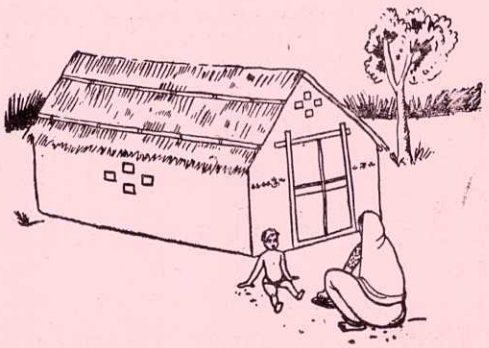

आज तुम घी के चिराग जलाओ। इस घर में एक नई रोशनी आई है। बरसों का भटका हुआ भगत आज अपने भीतर के भगवान से मिल गया है। जब एक दीपक जल जाता है तब दूसरे दीपक जलाने में देर नहीं लगती बहू ! अच्छा भगत !

[गुलिया भीतर जाती है]

भगतराम : [पुनः पैर पकड़ता हुआ] आपने मुझे नई जिन्दगी दी है मालिक ! आप न होते तो मैं गधे की तरह ही शराब ढोते-ढोते मर जाता। अब यह बचा हुआ जीवन आपका ही है, आपको ही समर्पित है।

पटवारी : उठो भगत ! हमारे पास इस तरह रोने-धोने के लिए समय नहीं है। गांव में घूम-घूम कर देखो ! आज पहली तारीख को भी कितने घरों में दीपक नहीं जल सके हैं। कितने घरों में बच्चे भूख से बिलख रहे हैं। गांव की कितनी मातायें पति से पैसा मांगने के अपराध में उनके द्वारा पशुओं की तरह पीटी जा रही हैं ! घर से बाहर निकल कर देखो कितने मजदूर शराब पीकर नालियों में पड़े हैं ! कितने लोग गलियों, बाजारों में लड़ते-झगड़ते हुए अपने सिर अपने ही हाथों से फोड़ रहे हैं। उठो ! इन सब के दिलों में तुमने ही नई जिन्दगी का दीपक जलाना है। उठाओ अपना तम्बूरा और आओ मेरे पीछे। सुना है अभी-अभी सीताराम बस दुर्घटना में बुरी तरह घायल हो गया है। मैं ठाकुर साहब के घर की ओर ही जा रहा था।

[जाते हैं]

भगतराम : [भगतराम अपना तम्बूरा उठा कर उसे सुधारता है और आलाप छेड़ता हुआ गाता है]

"मोरे उठत कलेजे में पीर अब तो शराब न छुऊं
ये तो जिन्दा जलाये शरीर अब तो शराब न छुऊं"

[गाता हुआ पटवारी जी के पीछे-पीछे जाता है। गुलिया अपने दरवाजे पर घी की दीपक जलाती है। पर्दा गिरता है]

[दृश्य 3]

[स्थान—पटवारी के घर का बरामदा। दीवाल पर गाँधी जी का एक चित्र टंगा है। मद्य-निषेध सम्बन्धी कुछ विज्ञापन भी लगे हुए हैं। पटवारी जी टहलते हुए सहसा गाँधी जी के चित्र के पास रुकते हैं और कहते हैं.]

पटवारी : शराब ने जितना सत्यानाश इस संसार का किया है, उतना न तो गरीबी ने किया है और न महायुद्धों ने। मानवता को इस सर्वनाश से बचाने का संकल्प किया था बापू जी आपने! आप के ही पद-चिन्हों पर चलते हुए इस देश में मद्य-निषेध सम्बन्धी १२ सूत्र लागू किये गये और अब तो ४ बरसों के भीतर ही सम्पूर्ण देश में मद्य-निषेध का संकल्प कर लिया गया है।

[सहसा सीताराम का प्रवेश। उसके हाथों तथा माथे पर कुछ पट्टियाँ बंधी है]

सीताराम : नमस्कार चाचा जी!

पटवारी : नमस्कार सीताराम! नमस्कार। आओ। कैसे?

सीताराम : आपके पास ही आया था चाचा जी! इन सात-आठ दिनों में आपने तो मुझे नई जिन्दगी ही प्रदान कर दी है। आप न मिलते तो में "ब्लैक एण्ड व्हाइट" के बदनसीब संसार में ही पूरी तरह खो गया था!

पटवारी : तुम ही क्या सीताराम! आज तो कॉलिजों के साठ-पैंसठ प्रतिशत विद्यार्थी मादक पदार्थों के विषैले संसार में खोये हुए हैं। इस

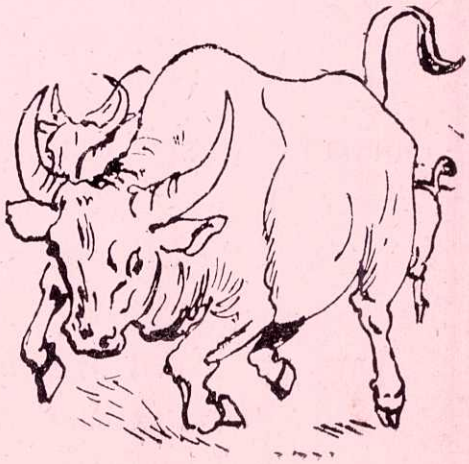

शराब ने उन्हें अपने माता-पिता, भाई-बहिन, पत्नी और बच्चों से अलग कर दिया है। विस्की, ब्रान्डी और रम का नशा मनुष्य को सचमुच राक्षस बना देता है सीताराम !

सीताराम : मैं ही कहाँ आदमी रह गया था चाचा जी। शराब के जोश में आकर मैंने भी तो अपने पिता को धक्का दिया, एक ही झटके में पत्नी का मंगल-सूत्र झटक लिया और रोती बिलखती माँ के गले में से सोने का हार उतार कर भाग गया। वही माता-पिता और पत्नी जिन्होंने मेरी घायल स्थिति में न दिन को दिन समझा और न रात को रात !

पटवारी : पुत्र के प्रति माता-पिता की ममता और पति के प्रति पत्नी का प्रेम संसार की सबसे बड़ी और पवित्र धरोधर है सीताराम ! इनके समक्ष भगवान भी झुक जाते हैं।

सीताराम : यही बात तो रह-रहकर जहर बुझे छुरे सी मेरे जिगर में कसक रही है चाचा जी ! उन्होंने मेरे लिए क्या किया और एक मैं हूं जिसने उनके साथ कौन सा दुर्व्यहार नहीं किया ?

पटवारी : सीताराम ! लड़का कितना ही गया-गुजरा क्यों न हो किन्तु माता-पिता के प्यार में कभी कोई परिवर्तन नहीं आता !

सीताराम : मैंने तो ऐसा पुस्तकों में पढ़ा था चाचा जी ! पर अब प्रत्यक्ष भी देख लिया। सचमुच मुझे अब नई जिन्दगी का प्रकाश मिल गया है। चाचा जी ! अब मुझे वह राह भी दिखा दीजिये जिसमें मैं अपने भीतरी संताप से मुक्त हो सकूं।

पटवारी : सीताराम ! कालिजों के जो छात्र आज गुमराह हो रहे हैं, जो अपने घर और स्वर्ग से बिछुड़ गये हैं, उनके जीवन में भी यह नया प्रकाश वितरित करो—अन्तः संताप से मुक्त होने का यही एक मार्ग है।

खबरदार ! यदि कक्षा से बाहर भागने की कोशिश की तो मार-मार कर भूसा बना दूँगा। मैं जानता हूँ कि तुम किसलिए कक्षा से छुट्टी लेना चाहते हो—कोई सिगरेट-बीड़ी, शराब नहीं चलेगी। जाओ कक्षा में बैठो और भूल जाओ पुरानी आदतें और नशें की लतों को।

सीताराम : यही होगा, चाचा जी ! यही होगा मैं कल ही छात्रावास जाऊँगा और वहां के कमरों में चल रहे चकलाघरों, जुए के अड्डों और शराबखानों को पूरी तरह बन्द कर दूँगा। आप देखेंगे कि जिन हाथों ने उन्हें खोलने और चलाने में मदद की थी वे ही हाथ अब किस निर्ममता से उन्हें तोड़ेंगे ?

पटवारी : यह अकेले का काम नहीं है सीताराम !

सीताराम : जहाँ नैतिकता, सत्य, ईमान और राष्ट्र सेवा की बात होती है वहाँ अकेले भी डर नहीं लगता चाचा जी ! फिर मैं दादा हूँ, जिस किसी ने शराब और अफीम का नाम लिया उसकी हड्डी-पसली एक कर दूँगा ?

पटवारी : सीताराम ! आज हमारे देश को सचमुच ऐसे ही नवयुवकों की जरूरत है। ऐसे ही युवकों के संकल्प की एक लहर चाहे तो तूफान बन कर सारे संसार को हिला सकती है।

सीताराम : अब यही होगा चाचा जी ! आज मैं और मेरे सारे साथी मद्य-पान निषेध के लिए सघन आन्दोलन छेड़ेंगे और आप देखेंगे कि अब शिक्षण-संस्थाओं, धर्म-शालाओं, छात्रा वासों के पास गावों

तथा शहरों के बीचों-बीच और राजमार्गों के किनारे एक भी शराबखाना नहीं चल सकेगा।

पटवारी : ठीक है सीताराम ! ये शराब के अड्डे मानव जीवन के कलंक ! और मानवता के चरम पतन के प्रतीक हैं। ये समाज के पिछड़ेपन के कारण और गरीबी के जनक हैं, इनका नामों निशान मिटना ही चाहिए।

सीताराम : चाचा जी ! आपने देश सेवा और शराबबन्दी के लिए राष्ट्रीय आन्दोलन का जो दीप जलाया है उसे मैं अपने खून से सींचकर भी जलाता रहूँगा।

पटवारी : मैं जानता हूं सीताराम ! तुम एक सच्चे राजपूत के पुत्र हो। आन और मान के पक्के। शराब एक बहुत बड़ी मानसिक गुलामी है—अंग्रेजों की दासता से भी अधिक भयंकर। मुझे प्रसन्नता है कि आज तुम्हारे रूप में हमारे देश की नई पीढ़ी ने उससे लोहा लेने का संकल्प कर लिया है। अब इस देश का इतिहास निश्चित ही नये ढंग से लिखा जाएगा।

सीताराम : आपका मैं सचमुच बहुत कृतज्ञ हूँ। किसी ने ठीक ही कहा है कि दीपक एक व्यक्ति जलाता है पर उसका प्रकाश सारे संसार को मिलता है। [सहसा बाहर से आवाज आती है—क्या सुरेश भैया हैं ?]

पटवारी : कौन ठाकुर साहब ! आइये, आइये ! [ठाकुर साहब का प्रवेश]

सीताराम : पिता जी ! क्षमा कर दें मुझे ! आज मुझे चाचा जी से नई जिन्दगी का रहस्य प्राप्त हो गया है [पैर पकड़ता है].

ठाकुर : उठो सीताराम ! तुझे क्षमा करने का साहस मुझ में कहाँ ? तुम अपने चाचा से क्षमा मांगों जिन्होंने इस गाँव में एक नई जिन्दगी का प्रकाश फैला दिया है। जिनकी जय आज हर आदमी के मुख पर है। जिनकी कृपा से आज न जाने कितने बुझे हुए चिराग जल उठे हैं। उठो बेटे ! इनसे आर्शीवाद लो। तुम्हारी माँ भी तुम्हारी राह देख रही है। [सीताराम पटवारी

जी के चरण स्पर्श करता है। पटवारी जी उसे अपनी बांहों में रोकते हैं]

पटवारी : आओ बेटे ! मुझ से नहीं, अपनी माँ का आशीर्वाद लो। उन्हें, प्रसन्न करो। संसार में माँ की तरह निश्छल प्रसन्नता तुम्हें और कहीं नहीं मिलेगी ?

सीताराम : जो आज्ञा चाचा जी। [जाता है]

पटवारी : अरे बैठिये न ठाकुर साहब ! मैं आपकी क्या...

ठाकुर साहब : दुख है सुरेश भैया कि मैं तुम्हें अभी तक एक सामान्य सरकारी कर्मचारी ही समझता रहा—गाँव में लड़ाई-झगड़ा बनाये रखने वाला और फिर दोनों ही पार्टियों से मोटी-मोटी रकमें वसूल करने वाला...

पटवारी : हां ठाकुर साहब ! वैसे भी सरकारी कर्मचारी होते हैं पर वे शासन और देश के लिए कलंक हैं।

ठाकुर साहब : तुम्हारा यह सर्वोदयी वेश, जनता की सेवा का निस्वार्थ बाना, बापू जी के पदचिन्हों पर चलने वाला त्यागपूर्ण जीवन—यह सब बता रहा है कि तुम सरकारी नौकर के साथ-साथ एक पूर्ण मानव भी हो वरना गाँव का पटवारी...

पटवारी : [हंसकर] सारे गाँव को अपने इशारों पर नचाता है ? यही न ? भय से घृणा उत्पन्न होती है और प्रेम से सद्भाव। मैंने जीवन का यही दूसरा मार्ग अपना लिया है ठाकुर साहब ! इसी के द्वारा मैं सरकारी नीतियों को जनता तक अधिक सक्षमता पूर्वक पहुँचा सकता हूँ। उन पर चलने के लिए लोगों को स्वेच्छा से तैयार कर सकता हूँ। देखो न ! मद्य-निषेध सम्बन्धी १२ सूत्र कार्यक्रम लागू तो हो चुके हैं, किन्तु उन के अनुसार ईमानदारी से कार्य करना—यह सब तो हम सब का ही दायित्व है।

ठाकुर साहब : ठीक कह रहे हैं सुरेश भैया आप ! गाँव-गाँव में रात-दिन जाकर कोई मंत्री, नेता या पुलिस वाला तो नहीं देखता रह सकता कि किसने शराब पी है और किसने नहीं ? यह सब तो हम ही

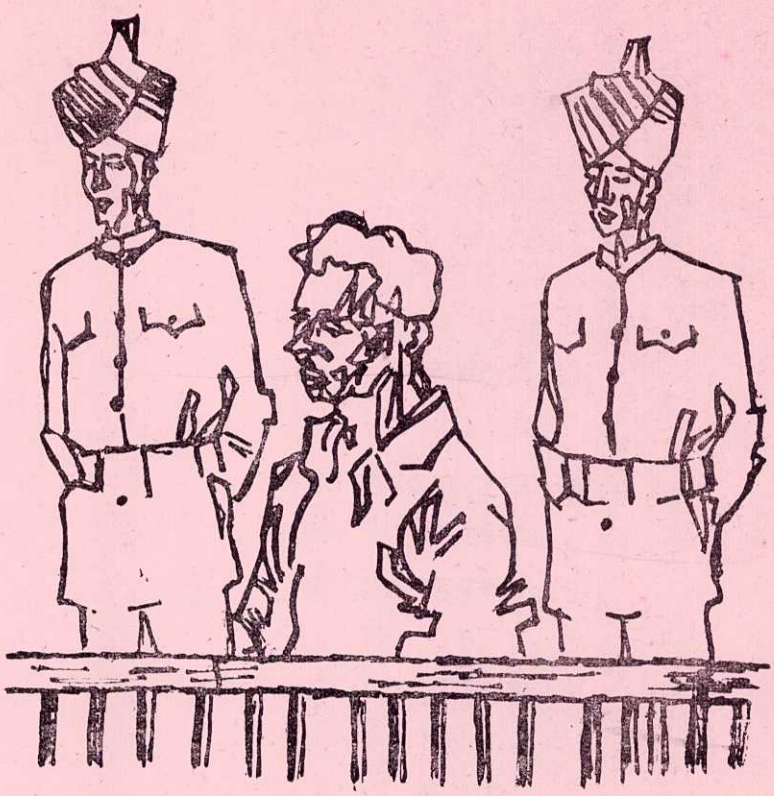

लोगों को देखना होगा। ओफ ! उस दिन का ट्रक और बस एक्सीडेंट का स्मरण करके मेरा दिल तो आज भी दहल उठता है !

पटवारी : हाँ, ठाकुर साहब ! शराब के कारण कितनी भयंकर दुर्घटनायें हो जाती हैं ! रात्रि का घोर अंधकार। चीख-चिल्लाहटों से कानों के परदे फट रहे थे। खून से सड़क लथपथ। सीताराम के साथ-साथ सरपंच का अकेला लड़का हरि, कितनी बुरी तरह से घायल हो गये थे...

ठाकुर साहब : इसमें मेरा ही दोष है सुरेश भैया ! मैं ही पाँच आदमियों की मौत और 8 आदमियों को जीवन-भर के लिए अपंग बनाने का कारण हूँ। चोटें तो मोटर में बैठे सभी आदमियों को लगीं। मैं ही हत्यारा हूँ...

पटवारी : दोषी ! हत्यारा ! कैसे ?

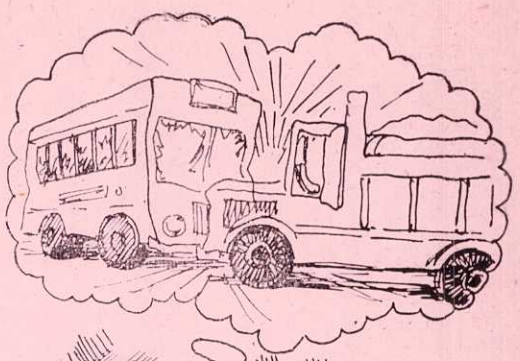

ठाकुर साहब : क्या तुम्हें नहीं मालूम सुरेश भैया ! मैंने ही अपने इन हाथों से ट्रक ड्राइवर को ठर्रा पिलाया था। मैं नहीं जानता था वह रमज़ान शराब के नशे में खुद भी मरेगा और दूसरे बेकसूर लोगों के जीवन से भी खेलेगा !

पटवारी : ठाकुर साहब ! इस में तुम्हारा क्या दोष ? हमारे देश में तो 28 प्रति शत ड्राइवर शराब के नशे में धुत्त होकर ट्रकें या बसें चलाते हैं। और इन्हीं के कारण देश में प्रति वर्ष 15 हजार से अधिक सड़क दुर्घटनायें होती हैं ! और इनमें मृत लोगों को मुआ-बज़े के रूप में जीवन बीमा निगम 50 करोड़ से अधिक धन-राशि प्रति वर्ष वितरित करता है। ये शराबी ड्राइवर खुद भी मरते हैं और दूसरों को भी मारते हैं और साथ ही देश की अर्थ-व्यवस्था भी चौपट करते हैं। इसीलिए शासन ने अब शराब पीकर किसी भी प्रकार के वाहन को चलाने पर कड़ा प्रतिबन्ध लगा दिया है।

ठाकुर साहब : शराब इतनी बुरी होती है, यह बात मुझे सीताराम के घायल होने के बाद ही पता चली। आपके कहने पर अब तो मैंने अपनी

शराब की दुकान भी बन्द कर दी है और गाँव के दूसरे ठेकेदार से कह दिया है कि शराब की अब कोई दुकान गाँव के भीतर या उसके आसपास नहीं रहेगी। अगर खोलना ही है उसे तो, ले जाओ इस जीवित - नरक को गाँव से एक मील दूर, जंगल की ओर...।

पटवारी : आपने बिलकुल ठीक किया ठाकुर साहब ! हमारे शासन ने भी अब इस प्रकार के कानून बना दिए हैं कि अब गाँव या शहर में सार्वजनिक महत्त्व की संस्थाओं के पास कोई शराब की

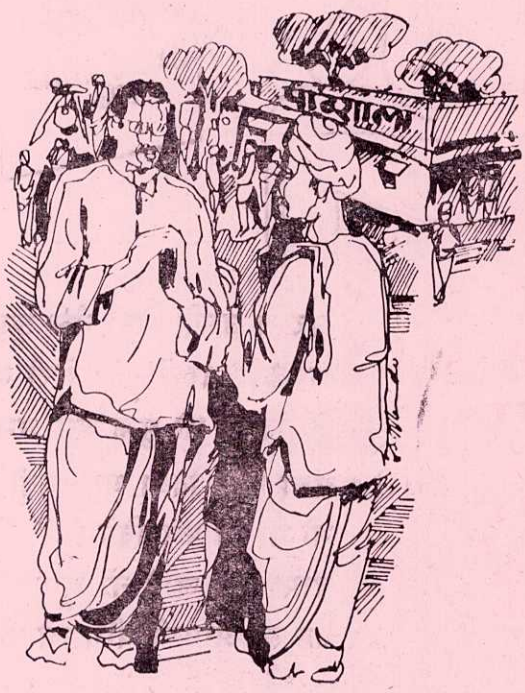

यहाँ पर जो पहले शराब का ठेका हुआ करता था, वह अब नए प्रशासन ने हटा दिया है। अब यहाँ आस - पास कोई शराब की दुकान तुमको नहीं मिलेगी।

दुकान नहीं रह सकती। शराब की दुकानों के लाइसेंसों का नवीनीकरण भी नहीं किया जायेगा। इतना ही नहीं, वेतन के दिन तो सारी शराब की दुकानें अनिवार्यतः बन्द रखी जाएंगी, जिससे मजदूर अपना पूरा वेतन अपने घर ला सकें। किन्हीं-किन्हीं शहरों में तो सप्ताह में दो-तीन दिन तक शराब की बिक्री पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया है।

ठाकुर साहब : पटवारी भैया ! शासन ने यह बहुत ही अच्छा कार्य किया है। मैं यह बात बहुत अच्छी तरह जानता हूँ कि शराब, मजदूरों की सब से बड़ी दुश्मन है; वह उनके समस्त दुःखों का कारण है। मैंने स्वयं शराब के कारण सैकड़ों घरों को उजड़ते हुए देखा है। शराब की उधारी वसूल करने के लिए जब मैंने मनमोहना के

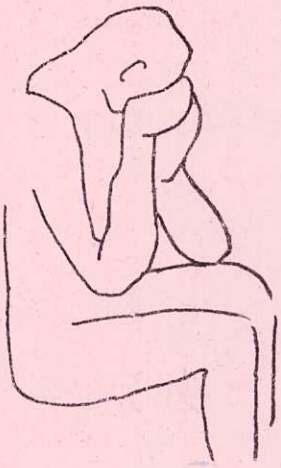

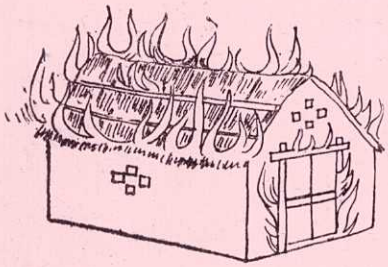

घर से उसके दोनों बैल छुड़वाये थे तब उसके बच्चों और बीबी का कलपना देखकर मेरी आँखों में आँसू आ गये थे पर शराब के नशे ने तो मुझे उस समय... !

पटवारी : अंधा बना दिया था, यही न ? पर अब तो तुमने उस के बैल भी वापस कर दिये हैं ? दिन भर का भूला यदि शाम को घर वापस आ जाये तो भूला नहीं कहा जाता, ठाकुर साहब !

ठाकुर साहब : यह तो आपकी योग की कक्षाओं का प्रभाव है, सुरेश भैया ?

पटवारी : जहाँ दुःख हैं वहाँ उनसे छुटकारा पाने के लिए कुछ उपाय भी हैं। योग, मन के संयम और कार्य करने की कुशलता का ही तो नाम है। परमहंस सत्यानंद के अनुसार विदेशों में शराब के नशे में डूबे हुए हजारों-लाखों की संख्या में हिप्पियों तथा विक्षिप्त लोगों ने कुछ ही यौगिक क्रियाओं के द्वारा, थोड़े से समय में ही शराब की लत छोड़ दी है। इसीलिए मैंने भी अपने घर में एक छोटी-सी प्रयोगशाला खोल रखी है...।

ठाकुर साहब : पर मैं तो उसे अभी तक एक पागलखाना ही समझता था ?

पटवारी : अब तो आप खुद ही देख चुके हैं—लछमनियाँ, मनमोहना, पुसऊवा, लटोरा अर्जुना आदि की शराब की लतें मैंने किस प्रकार इन सात-आठ दिनों में ही, केवल योग-निद्रा के प्रति दिन 20-20 मिनिट के अभ्यास द्वारा छुड़ा दी हैं।

ठाकुर साहब : मैं तो अभी तक योग को साधु-संन्यासियों की ही वस्तु मानता था ?

पटवारी : मगर अब तो पता चल गया कि योग की जितनी जरूरत गृहस्थ जीवन में है उतनी सन्यस्त जीवन में नहीं। शराब-बंदी के लिए तो मन का यह प्रशिक्षण बहुत जरूरी है अन्यथा केवल नियमों से उसे बन्द नहीं किया जा सकता...।

ठाकुर साहब : अभी मैंने समाचार पत्रों में पढ़ा था कि केन्द्रीय शासन, शिक्षा व्यवस्था में भी योग को एक विषय के रूप में जोड़ रहा है—क्या यह सत्य है ?

पटवारी : हाँ, क्योंकि उसका सम्बन्ध शिक्षा के गुणात्मक विकास से तो है ही, देश की वास्तविक जन-मन की उन्नति से भी है। यही कारण है कि आजकल पश्चिमी देश योग की दिशा में बहुत तेजी से बढ़ रहे हैं, उसके पीछे दीवाने हो रहे हैं...।

ठाकुर साहब : आप उस दिन कह रहे थे कि हर प्रकार के पेय पदार्थ में एक मादक नशा होता है, यहाँ तक कि चाय और तम्बाखू में भी ?

पटवारी : हाँ, गांधी जी तो चाय को स्लो प्वाइज़न कहते थे। डाक्टरों के

अनुसार उसमें कैफीन, थीन, पियो, ब्रोमाइन, पेपीन, टेनिन, साइनोजेन, स्ट्रिकलाइन और एरोमोलिक—ये पूरे नौ ज़हर होते हैं। ये व्यक्ति के पाचन संस्थान को तो बुरी तरह से बिगाड़ते ही हैं, रक्तचाप, ब्लड प्रैसर, अनिद्रा, मानसिक दुर्बलता, मूर्च्छा, चक्कर, चिड़चिड़ाहट आदि अनेक रोगों को भी जन्म देते हैं।

ठाकुर साहब : चाय के एक प्याले में इतने अधिक जहर सुरेश भैया ?

पटवारी : ठाकुर साहब ! शायद आप को पता नहीं कि चाय बागानों के मालिक अपनी चाय की बिक्री बढ़ाने के लिए अक्सर शराब या अफीम के घोल में डाल कर ही चाय की पत्तियाँ सुखाते हैं जिससे लोगों की चाय पीने की आदत बढ़ती चली जाती है। यह चाय शराब की छोटी बहिन ही समझो ?

ठाकुर साहब : सुरेश भैया ? यह दुनिया अपने पैरों पर खुद ही कुल्हाड़ी चला रही है ?

पटवारी : और तम्बाखू खाने या पीने से मनुष्य को वही नशा मिलता है जो लाइट शराब जैसे स्कॉच या बियर पीने से मिलता है। सिगरेट के ऊपर तो अब स्पष्ट रूप से लिखा रहता है— "यह स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।"

ठाकुर साहब : सचमुच सुरेश भैया ! तुम ने तो हम सब गाँव वालों के भीतरी नेत्र खोल दिये। तुम्हारे ही प्रयत्नों का फल है कि अब इस गाँव में कोई मादक पेय पदार्थ नहीं बिकता। मैं चाय, बीड़ी और तंबाखू की खुली बिक्री पर भी प्रतिबन्ध लगवाऊँगा। मैं ऐसी जन-समितियों का गठन भी करूँगा जो लोगों पर बराबर नजर रखें...।

पटवारी : जिस गाँव को आप जैसे कर्मठ और सीताराम जैसे हिम्मती नव-युवक मिल गए हों, उसके आदर्श ग्राम बनने में अब कितनी देर लग सकती है ?

ठाकुर साहब : मैं तो जीवन जीने का सही रहस्य आज ही समझ सका हूँ— मनुष्य शराब, चाय, तम्बाखू, बीड़ी, सिगरेट आदि मादक पदार्थों

के सेवन में जितनी धनराशि खर्च करता है उससे आधी धनराशि में ही उसकी गरीबी दूर हो सकती है, उसके जीवन के सुख, शान्ति, समृद्धि और स्वाधीनता के मार्ग खुल सकते हैं; सच्चा स्वराज्य या समाजवाद आ सकता है...

पटवारी : मनुष्य अगर संकल्प कर ले ठाकुर साब ! तो कुछ भी असंभव नहीं है। आवश्यकता है अपनी समस्याओं को ठीक तरह से समझने की और उनके समाधान के लिए निष्ठा-पूर्वक कार्य करने की।

[नेपथ्य में भगतराम द्वारा गायन के स्वर उभर रहे हैं–

अंगना सूखे सूखनो वन सूखे कचनार।
महुआ सूखे खेत में घर में सूखे नार॥
भर जुवानी में सैंया सूखें जैसे सूखे घास
शराबी रे तोरे भले होवे, न।
ये तो ज़िन्दा जलाये शरीर
अब तो शराब न छुऊं।
मोरे उठत कलेजवा में पीर...

[सहसा प्रवेश करके] राम राम पटवारी भैया ! राम राम ठाकुर साब !

ठाकुर साहब : राम राम भगत ! मैंने सुन लिया है तुम्हारा गाना। आज मुझे अपने जीवन में सबसे अधिक प्रसन्नता हुई है। शराब के विरुद्ध प्रचार करने का जब तुमने व्रत ले लिया है तब अब किस में हिम्मत है जो उसकी ओर आँख उठाकर भी देख सके?

भगतराम : मैं क्या हूँ मालिक ! मेरा घर तो पूरी तरह उजड़ ही गया था। वह तो पटवारी भैया ने बसा दिया। [गाता है]—"अब तो शराब न छुऊं। ये तो जिन्दा जलाये शरीर"...[सहसा रुक कर] पिछले सात-आठ दिनों से गाँव के हर घर में बच्चे प्रसन्नता से हँस रहे हैं। मातायें चूल्हे-चौके में लगी हुई हैं। हर बाप निश्चिन्त है। सयाने लड़के शाम से ही अपने-अपने घर पहुंचने लगे हैं और गाँव के बाहर का शराब-खाना भी पूरी तरह बन्द पड़ा है। [पुनः गाता और नाचता है—"ये तो जिन्दा जलाये शरीर अब तो शराब न छुऊं]"

पटवारी : यही चाहिए था भगत, यही चाहिए था। आज मेरा जीवन सफल हो गया। किन्तु ठाकुर साहब! हमें इतने से ही संतोष नहीं कर लेना है। अभी

तो हमें युवा-पीढ़ी के विकास के लिए हर गाँव में युवा क्लब खोलने हैं, उनके मनोरंजन के साधन जुटाने हैं, अनपढ़ लोगों

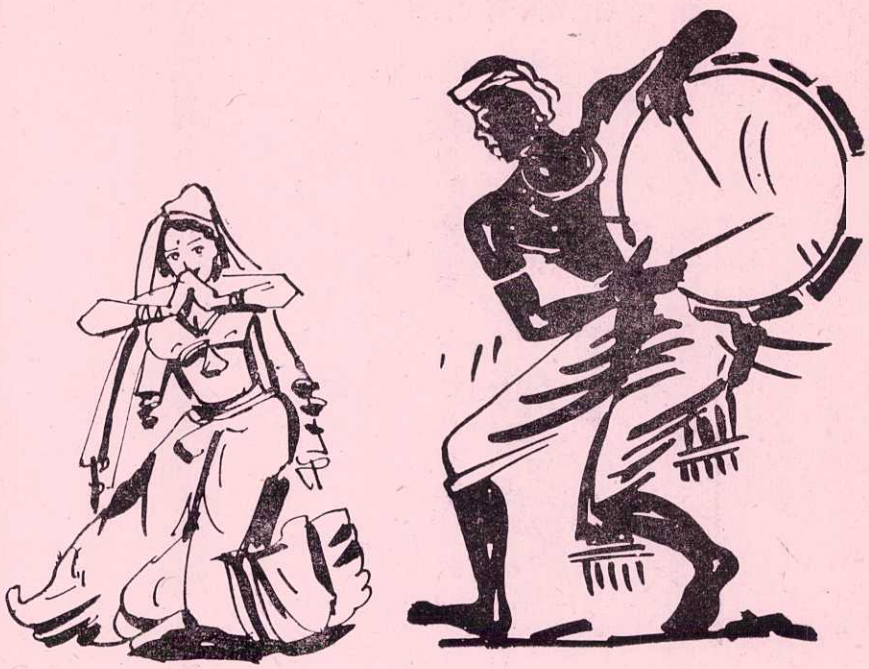

को साक्षर बनाना है, बेकार लोगों को गृह उद्योग धंधों के लिए प्रशिक्षित करना है। प्रयोगशाला का विस्तार करना है, टेली-विज़न का प्रबन्ध ..

ठाकुर साहब : प्रयोगशाला अब नेरी खाली पड़ी शराब की दुकान में लगेगी और टेलिविज़न लगाने का सारा खर्च अकेले में दूँगा। पर अब

जो कदम उठ चुका है वह पीछे नहीं जा सकता। भगतराम ! गाओ, जी भर नाचो, आज यह दिन हमारे गाँव की नई ज़िन्दगी का पहला दिन है ...।

भगतराम गाता है। गुलिया का, हाथ में एक थाली लिए हुए प्रवेश। थाली में जलते हुए बारह दीपक हैं। वह गाँधी जी की आरती उतारती है। पर्दा गिरता है। नेपथ्य में कुछ समय तक भगतराम के गीतों के स्वर गूंजते रहते हैं] ☼☼☼

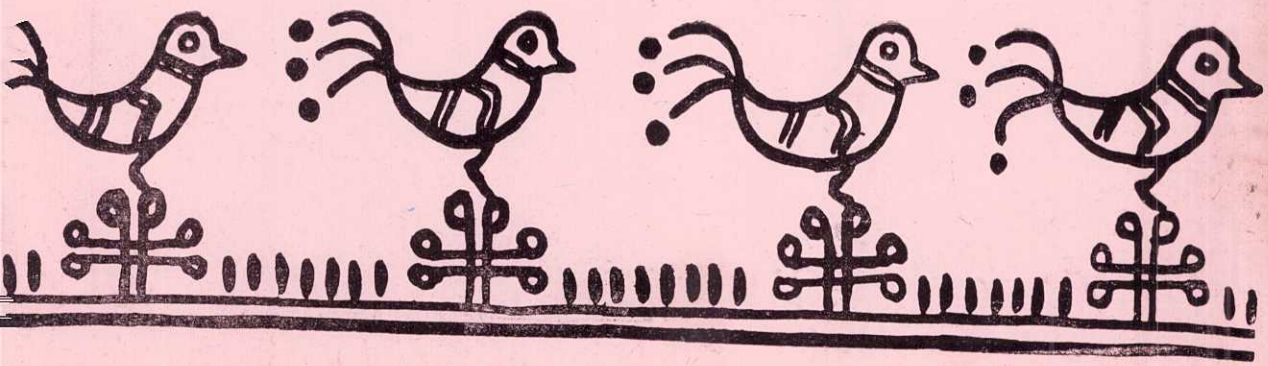

ग्रामीण साहित्य माला के अन्य पुष्प

1. रधिया लौट आई	कमला रत्नम्
2. आग और पानी	डॉ० प्रभाकर माचवे
3. मेरे खेत में गाय किसने हांकी ?	जोगेन्द्र सक्सैना
4. जीवन की शिक्षा (लोक कथायें)	नारायण लाल परमार
5. बिटिया का गीत	शिव गोविन्द त्रिपाठी
6. समाज का अभिशाप	ब्रह्म प्रकाश गुप्त
7. एक रात की बात	इन्दु जैन
8. कल्याण जी बदल गये	अ० अ० अनन्त
9. शहर का पत्र गांव के नाम तथा बढ़ते क़दम	डॉ० योगेन्द्र नाथ शर्मा 'अरुण' विमला लाल